International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 6.924 Volume 9, Issue 09, September 2022
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

शैक्षिणक विधियों और पाठ्यचर्या में स्वामी विवेकानन्द के विचारों का अध्ययन

नेहा वर्मा[1], डॉ. छत्रसाल सिंह[2],

[1]शोधार्थी ,डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय , फैज़ाबाद उत्तर प्रदेश

[2]असोसिएट प्रोफेसर , शिक्षा शास्त्र विभाग , जवाहर लाल नेहरू पी. जी. कॉलेज बाराबंकी , उत्तर प्रदेश

सारांश

शिक्षा के अर्थ को स्पष्ट करते हुये उन्होंने लिखा है कि- "शिक्षा की व्याख्या व्यक्ति के विकास के रूप में की जा सकती है। शिक्षा व्यक्ति की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।" स्वामी जी के विचारानुसार शिक्षा जीवन संघर्ष की तैयारी है। वह शिक्षा बेकार है जो व्यक्ति को जीवन संघर्ष हेतु यार नहीं करती है। स्वामी जी के पाठ्यक्रम शिक्षण विधि – अनुशासन, शिक्षा में शिक्षक एवं शिक्षार्थी का स्थान, स्त्री एवं जनशिक्षा के सम्बन्ध में हैं। विवेकानन्द ने व्यक्ति की आध्यात्मिक उन्नति के साथ ही लौकिक समृद्धि को भी आवश्यक माना। वे आध्यात्मिक उन्नति एवं लौकिक समृद्धि का विकास शिक्षा द्वारा करने के पक्ष में थे। इसीलिये उन्होंने शिक्षा के पाठ्यक्रम के अन्तर्गत उन समस्त विषयों को समाविष्ट किया जिनको पढ़ने से आध्यात्मिक एवं लौकिक विकास एक साथ होता रहे। व्यक्ति के आध्यात्मिक पक्ष को विकसित करने हेतु उन्होंने उपनिषद, दर्शन, पुराण इत्यादि की शिक्षा पर विशेष बल दिया और भौतिक विकास हेतु भूगोल, राजनीतिशास्त्र, इतिहास, अर्थशास्त्र व्यावसायिक एवं कृषि शिक्षा, व्यायाम, भाषा इत्यादि विषयों पर विशिष्ट बल दिया। स्वामी जी के अनुसार- "यह अधिक उत्तम होगा यदि व्यक्तियों को थोड़ी तकनीकी शिक्षा मिल जाये, जिससे वे नौकरी की तलाश में इधर-उधर भटकने के स्थान पर किसी कार्य में लग सकें और जीविकोपार्जन कर सकें।" उनका कहना था कि विज्ञान की शिक्षा देते समय उसका वेदान्त से समन्वय स्थापित किया जाये।

मुख्यशब्द:- स्वामी विवेकानन्द, शैक्षिणक परिप्रेक्ष्य, शैक्षिक दृष्टिकोण

© **Associationof Academic Researchers and Faculties (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

प्रस्तावना

किसी भी व्यक्तित्व की उभरती हुई छवि संबंधित व्यक्ति के पथप्रदर्शक योगदान के समसामयिक प्रतिबिंब द्वारा निर्मित होती है जो उसे किसी भी विषय के क्षेत्र में अवांट-ग्रेड का प्रतीक बनाती है। उस प्रकार की 'छवि' उस समय और उससे बहुत आगे के समय के बीच एक वांछनीय संयोजन के रूप में खड़ी है। इस प्रकार एक उभरते हुए व्यक्तित्व की मुख्य विशेषताएं, कई सहस्राब्दियों के भविष्यवक्ता, सहानुभूति रखने और जहाँ तक संभव हो सबसे अच्छा समाधान पेश करने की क्षमता रखते हैं। दूसरा समय के रथ को सकारात्मक दिशा में मोड़ना है। तीसरा है अज्ञान की सदियों पुरानी नींद को झकझोरना और लोगों को आशावाद के उगते सूरज के क्षेत्र की ओर ले जाना। एक शिक्षक के रूप में विवेकानंद की उभरती हुई छवि तीनों का एक आदर्श अवतार है। इस प्रकार, वर्तमान शैक्षिक दृष्टिकोण पर जोर देते हुए एक शिक्षक के रूप में विवेकानंद की उभरती छवि का पता लगाना महत्वपूर्ण है। विवेकानंद का शिक्षा का दर्शन मानवता को स्वयं को बदलने और जीवन के अधिक जिम्मेदार और टिकाऊ तरीकों को प्राप्त करने के लिए एक स्पष्ट आह्वान प्रदान करता है।

एक उभरती हुई छवि की रूपरेखा दो दृष्टिकोणों के अनुसार वास्तविकता में आ गई है: i) यदि पहले से ही ऐसी प्रोफ़ाइल / छवि का कोई अस्तित्व है, जिसके साथ भविष्य का शोधकर्ता मिलान करने का प्रयास कर सकता है, जो भी परिकल्पना हो। ii) दूसरे प्रकार की ऐसी 'छवि' इंगित करती है कि यदि ऐसा कोई पिछला उदाहरण नहीं है। यह पूरी तरह से एक प्रतीकात्मक प्रयास है। एक शिक्षक के रूप में स्वामी विवेकानंद की उभरती छवि बीसवीं सदी के उत्तरार्ध और इक्कीसवीं सदी में शिक्षा के संदर्भ में इसी श्रेणी की है। तो विवेकानंद का स्व क्या है? हम उनकी उभरती हुई छवि के मूल तक पहुंचने की कोशिश सिर्फ पांच शब्दों में कर सकते हैं। पांच शब्दों के साथ उन्होंने पुरुषों और महिलाओं को "पृथ्वी पर देवत्व, - पापियों" के रूप में संबोधित किया? पहले चार शब्द पुरुषों की जातियों के लिए खुशी, आशा, पौरुष, ऊर्जा और स्वतंत्रता के नए सुसमाचार के रूप में गरजे। और अंतिम शब्द के साथ, व्यंग्यात्मक प्रश्न के रूप में अवतार लेते हुए, उन्होंने आत्मा-अपमानजनक, कायरता को बढ़ावा देने वाले, नकारात्मक, निराशावादी विचारों के पूरे ढांचे को ध्वस्त कर दिया...। और फिर भी मानव विचार के इतिहास में कभी भी विवेकानंद द्वारा इसे गतिशील तरीके से करने और विश्व के चैंपियन के रूप में तात्कालिक पहचान प्राप्त करने से पहले कभी भी पूरा नहीं किया गया था (सरकार, 1932, पीपी.32-34)। जो सत्य है उसकी खोज और जो अच्छा है उसका अभ्यास दर्शन के दो सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं। यदि 'दर्शन' को 'शिक्षा' शब्द से बदल दिया जाए, तो प्रारंभिक कथन समान रूप से महत्वपूर्ण होगा, दोनों विषयों के बीच सुनहरा संबंध इतना करीब है। उभरती हुई छवि की

अवधारणा, यानी, कुछ या कोई व्यक्ति मौजूद है और समय-समय पर अपनी उत्कृष्टता साबित करता है और यह सत्य एक शिक्षक के रूप में स्वामी विवेकानंद की छवि के साथ काफी संगत है। 21वीं सदी के प्रकाश में स्वामी विवेकानंद की धीरे-धीरे और अत्यधिक विकसित हो रही छवि का प्रभाव मूल रूप से अज्ञात सत्य की हमारी खोज के दायरे को प्रज्वलित करता है, और भारत की आत्मा की पुन: खोजी गई प्रतीकात्मक व्याख्या और जागृति को उजागर करता है। पं. जवाहरलाल नेहरू ने एक बार इस तरह से विवेकानंद को अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त की, "अतीत में जड़ें और भारत की प्रतिष्ठा में गर्व से भरे हुए, विवेकानंद जीवन की समस्याओं के अपने दृष्टिकोण में अभी भी आधुनिक थे और अतीत के बीच एक तरह का सेतु थे। भारत और उसका वर्तमान। उनका मिशन समाज सेवा, जन शिक्षा, धार्मिक पुनरुत्थान और शिक्षा के माध्यम से सामाजिक जागृति के माध्यम से मानव जाति की सेवा थी।

शिक्षण विधियाँ **(Teaching Methods)**

(i) ज्ञान की सर्वोत्तम विधि एकाग्रता को बताते हुये उन्होंने इस तथ्य पर अधिक बल दिया कि एकाग्रता का अधिकाधिक विकास किया जाये क्योंकि एकाग्र मन से ही ज्ञान की अधिक उपलब्धि हो सकती है। अतः अध्यापक को अपना शिक्षण कार्य इस प्रकार आयोजित करना चाहिए, जिससे समस्त शिक्षार्थी एकाग्रचित होकर उसमें रुचि ले सकें।

(ii) स्वामी विवेकानन्द के अनुसार मार्ग में आयी बाधाओं को समाप्त करने हेतु शिक्षार्थियों को अपने पथ-प्रदर्शक के साथ तर्क-वितर्क करते हुए बाधाओं को समाप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

(iii) व्यक्तिगत निर्देशन को भी स्वामी जी ने महत्वपूर्ण बताया है। उनका कहना है कि शिक्षक को, शिक्षण की प्रक्रिया में शिक्षार्थियों का पथ-प्रदर्शन करना चाहिए, क्योंकि अध्यापक को ज्ञान की प्रक्रिया के मध्य शिक्षार्थियों के समक्ष आने वाली कठिनाइयों का ज्ञान होता है।

(iv) अनुकरण विधि ! के माध्यम से शिक्षार्थियों का विकास किया जाना चाहिए।

(v) ज्ञान को समन्वित करके प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

(vi) विचार-विमर्श एवं उपदेश विधि द्वारा ज्ञानार्जन किया जाना चाहिए।

(vii) शिक्षार्थियों को उचित मार्ग पर अग्रसरित करने हेतु परामर्श विधि! का उपयोग किया जाना चाहिए।

उपर्युक्त विधियों के अतिरिक्त स्वामी विवेकानन्द ने निरीक्षण, वाद-विवाद, भ्रमण, श्रवण, ब्रह्मचर्य का पालन, आत्मविश्वास की जागृति और रचनात्मक क्रिया-कलापों पर भी बल श्रद्धा, दिया है।

अनुशासन **(Discipline)**

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार स्वतन्त्रता का उन्मुक्त वातावरण, अधिगम की अनिवार्य आवश्यकता है। इसलिये छात्रों को कठोर बन्धन में रखने के बजाय उन्हें प्रेम व सहानुभूति के साथ विकसित होने के अवसर उपलब्ध कराये जाने चाहिए। स्वामी विवेकानन्द ने दमनात्मक अनुशासन का घोर विरोध किया। उनके अनुसार बालकों को अनुशासित करने हेतु तथा व्यवहार में परिवर्तन लाने हेतु अध्यापक का आचरण प्रभावशाली होना आवश्यक है। वे स्वतन्त्रता को अनुशासन स्थापित करने का सबसे प्रभावी साधन मानते थे। उनका कहना था कि यदि बालकों को पूरी स्वतन्त्रता दी जाये तो वे अपने आप ही अनुशासित होते जायेंगे, जिससे उनमें स्वानुशासन स्थापित होगा। यही उनकी शिक्षा प्रक्रिया को भी अत्यन्त सहज बना देगी।

अध्यापक **(Teacher)**

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत अध्यापक का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। बालक की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास अध्यापक के अभाव नहीं हो सकता है। उनके शब्दों में शिक्षा गुरु गृहवास है। अध्यापक के वैयक्तिक जीवन के अभाव में शिक्षण असम्भव है। इसलिये आरम्भ से ही छात्र को इस प्रकार के अध्यापक के सान्निध्य में रहना चाहिए जिससे वह उच्च आदर्शों को प्राप्त कर सके। स्वामी जी के अनुसार शिक्षक में निम्नलिखित गुणों का होना नितान्त आवश्यक है-

(i) उच्च चरित्र – स्वामी जी के अनुसार अध्यापक का चरित्र अत्यन्त उच्च होना चाहिए। उसे बालक में मात्र बौद्धिक जिज्ञासा ही उत्पन्न नहीं करनी चाहिए वरन् उसे स्वयं के आदर्शयुक्त उच्च चरित्र से अपने छात्रों को प्रभावित करना चाहिए। स्वामी जी के कथनानुसार "अध्यापक का कर्त्तव्य वास्तव में ऐसा कार्य है कि वह छात्र में मात्र उपस्थित बौद्धिक तथा अन्य क्षमताओं की अभिप्रेरणा पैदा न करे अपितु कुछ अपना आदर्श भी दे । वह आदर्श वास्तविक एवं प्रशंसनीय होना चाहिए जो छात्र को मिले क्योंकि अध्यापक के आदर्श व्यवहार का प्रभाव छात्रों के व्यवहार को प्रभावित करता है। अतः अध्यापक में पवित्रता होनी चाहिए।

(ii) प्रेम व सहानुभूति – स्वामी जी के अनुसार अध्यापकों में अपने छात्रों के प्रति प्रेम एवं सहानुभूति की भावना होनी चाहिए। प्रेम के अभाव में अध्यापक छात्रों को कुछ भी नहीं दे सकता और सहानुभूति के अभाव में वह छात्रों को कुछ भी नहीं पढ़ा सकता। अध्यापक की यह भावना स्वार्थरहित होनी चाहिए।

(iii) त्याग भावना- स्वामी जी का कहना था कि शिक्षक को धन, सम्पत्ति अथवा अन्य किसी भी लोभवश शिक्षा प्रदान नहीं करनी चाहिए। यदि अध्यापक को सच्चे अर्थ में गुरु बनना है तो उसे स्वार्थरहित सेवा भावना को अपनाना होगा।

(iv) शास्त्रों का ज्ञाता – अध्यापक को शास्त्रों का ज्ञाता होना चाहिए तभी वह अपने छात्रों को वास्तविक ज्ञान प्रदान कर सकेगा।

(v) निष्पापता – स्वामी जी के अनुसार अध्यापक को मन से निष्कपट व शुद्ध चित्त होना चाहिए तभी उसके शब्दों का मूल्य होगा।

स्वामी विवेकानन्द ने अध्यापक हेतु आवश्यक शब्दों के सम्बन्ध में लिखा है-"सच्चा" गुरु वह है जो तुरन्त छात्रों के स्तर तक उतर आये तथा अपनी आत्मा को उनकी आत्मा में स्थानान्तरित कर सके। उनके नेत्रों से देख सके, उनके कानों से सुन सके तथा उनके मन से समझ सके। ऐसा ही अध्यापक वास्तव में पढ़ा सकता है और कोई नहीं।"

शिक्षार्थी **(Student)**

स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा में बालक को सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण माना। उनके अनुसार- "अपने अन्दर जाओ तथा उपनिषदों को स्वयं में से बाहर निकालो। सबसे महान् पुस्तक हो जो कभी थी या होगी। जब तक अन्तरात्मा नहीं खुलती, तंब तक सम्पूर्ण बाह्य शिक्षण बेकार है।" स्वामी जी के इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि बालक की आन्तरिक अभिप्रेरणा तथा इच्छा का शिक्षक की प्रक्रिया के अन्तर्गत सबसे अधिक महत्त्व है।

अध्यापक के समान ही छात्र हेतु भी स्वामी जी ने निम्नलिखित गुणों का उल्लेख किया है- शिक्षार्थी में अपने गुरु के प्रति श्रद्धा एवं स्वतन्त्र चिन्तन की शक्ति होनी चाहिए। उनके अनुसार- " पर यह भी सच है किसी के प्रति अन्धानुभक्ति से व्यक्ति की प्रवृत्ति दुर्बलता तथा व्यक्तित्व की उपासना की तरफ झुकने लगती है। अपने गुरु की पूजा ईश्वर दृष्टि से करो लेकिन उनकी आज्ञापालन आँखें बन्द करके मत करो प्रेम तो उन पर पूर्णतः करो, लेकिन स्वयं भी स्वतन्त्र रूप से विचार करो।"

नारी शिक्षा **(Women Education)**

स्वामी विवेकानन्द समाज में स्त्रियों की दुर्दशा से अत्यन्त दुःखी थे। स्त्री एवं पुरुष के मध्य अन्तर की स्वामी जी ने कटु आलोचना की। उनका कहना था कि समस्त प्राणियों में एक ही आत्मा है, इसलिये स्त्रियों पर कठोर नियन्त्रण रखना वांछनीय नहीं है। स्वामी जी ने स्त्री को पुरुष के समान दर्जा देते हुये कहा कि जिस देश में स्त्री का सम्मान व आदर नहीं होता, वह देश कभी भी प्रगति नहीं कर सकता।

स्वामी विवेकानन्द ने स्त्रियों की सम्पूर्ण समस्याओं का सर्वप्रमुख कारण अशिक्षा बताया है। स्वामी जी स्त्री शिक्षा के पक्षपाती थे। नारी शिक्षा के महत्त्व के सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्द ने लिखा है- "पहले अपनी स्त्रियों को शिक्षित करो, तब वे आपको बतायेंगी कि उनके लिये कौन-कौन से सुधार करने आवश्यक हैं ? उनके सम्बन्ध में तुम बोलने वाले कौन हो ?" स्वामी जी का कहना था कि धर्म स्त्री शिक्षा का केन्द्रबिन्दु होना चाहिए और स्त्री शिक्षा के मुख्य अंग चरित्र गठन, ब्रह्मचर्य पालन एवं पवित्रता होने चाहिए। स्त्री शिक्षा के पाठ्यक्रम के अन्तर्गत स्वास्थ्य रक्षा, कला, शिशुपालन, कला-कौशल गृहस्थ जीवन के कर्त्तव्य, चरित्रगठन के सिद्धान्त, पुराण, इतिहास, भूगोल इत्यादि विषयों को समाविष्ट किया जाना चाहिए। स्वामी जी भारतीय स्त्रियों को सीता-सावित्री जैसी स्त्रियों के आदर्शों का पालन एवं अनुकरण करने हेतु कहा करते थे। वे नारी में नारीत्व को विकसित करना चाहते थे, पुरुषत्व को नहीं। उनके शब्दों में-"मेरी बच्चियो ! महान् बनो, महापुरुष बनने का प्रयास मत करो।"

जन- शिक्षा **(Mass-Education)**

स्वामी विवेकानन्द देश के निर्धन एवं निरक्षर व्यक्तियों की दयनीय स्थिति को देखकर अत्यन्त दुःखी थे। उनके अनुसार "जब तक भारत का जन समूह भली प्रकार शिक्षित नहीं हो जाता, भली प्रकार उनका पेट नहीं भर जाता तथा उन्हें उत्तम संरक्षण नहीं मिलता, तब तक कोई भी राजनीति सफल नहीं हो सकती।" स्वामी जी का विश्वास था कि इन दीन दुःखियों की दशा में शिक्षा के माध्यम से सुधार किया जा सकता है। यदि अपने देश को समृद्धशील बनाना है तो उसे इन असंख्य नर-नारियों को शिक्षित करना होगा।

विवेकानन्द के शिक्षा के उद्देश्य

स्वामी विवेकानन्द मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों रूपों को वास्तविक मानते थे, सत्य मानते थे। इसलिए मनुष्य के दोनों पक्षों के विकास पर बल देते थे। स्वामी जी ने शिक्षा के जिन उद्देश्यों पर बल दिया है उन्हें हम निम्नलिखित रूप में क्रमबद्ध कर सकते हैं-

1. शारीरिक विकास- स्वामी जी भौतिक जीवन की रक्षा एवं उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति और आत्मानुभूति दोनों के लिए स्वस्थ शरीर की आवश्यकता समझते थे। भौतिक दृष्टि से इन्होंने कहा कि इस समय हमें ऐसे बलिष्ट आत्मानुभूति के लिए इन्होंने ज्ञान योग, कर्म योग, भक्ति योग अथवा राज योग को आवश्यक बताया और इनमें से किसी भी प्रकार के योग साधन के लिए स्वस्थ शरीर की आवश्यकता स्पष्ट की। इनकी दृष्टि से शिक्षा द्वारा सर्वप्रथम मनुष्य का शारीरिक विकास ही किया जाना चाहिए।

2. मानसिक एवं बौद्धिक विकास- स्वामी जी ने भारत के पिछड़ेपन का सबसे बड़ा कारण उसके बौद्धिक पिछड़ेपन को बताया और इस बात पर बल दिया है कि हमें अपने बच्चों का मानसिक एवं बौद्धिक विकास

करना चाहिए और इसके लिए उन्हें आधुनिक संसार के ज्ञान-विज्ञान से परिचित कराना चाहिए, जहाँ से जो भी अच्छा ज्ञान एवं कौशल मिले उसे प्राप्त कराना चाहिए और उन्हें संसार में आत्मविश्वास के साथ खड़े होने की सामर्थ्य प्रदान करनी चाहिए।

3. समाज सेवा की भावना का विकास- स्वामी जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि पढ़-लिखने का अर्थ यह नहीं कि अपना ही भला किया जाए, मनुष्य को पढ़-लिखने के बाद मनुष्य मात्र की भलाई करनी चाहिए। इन्होंने भारत की जनता की दरिद्रता को स्वयं अपनी आँखों से देखा था। ये चाहते थे कि पढ़े-लिखे और सम्पन्न लोग दीन-हीनों की सेवा करें, उन्हें ऊँचा उठाने के लिए प्रयत्न करें, समाज सेवा करें। समाज सेवा से इनका तात्पर्य दया या दान से नहीं था, समाज सेवा से इनका तात्पर्य दीन-हीनों के उत्थान में सहयोग करने से था, उठेंगे तो वे स्वयं ही। ये शिक्षा द्वारा ऐसे समाज सेवियों की टीम तैयार करना चाहते थे। ये आध्यात्मिक दृष्टि से भी समाज सेवा को बहुत महत्व देते थे। ये मनुष्य को ईश्वर का मन्दिर मानते थे और उसकी सेवा को ईश्वर की सेवा मानते थे।

4. नैतिक एवं चारित्रिक विकास- स्वामी जी ने यह बात अनुभव की कि शरीर से स्वस्थ, बुद्धि से विकसित और अर्थ से सम्पन्न होने के साथ-साथ मनुष्य को चरित्रवान भी होना चाहिए। चरित्र ही मनुष्य को सत्यनिष्ठ बनाता है, कर्तव्यनिष्ठ बनाता है। इसलिए इन्होंने शिक्षा द्वारा मनुष्य के नैतिक एवं चारित्रिक विकास पर भी बल दिया। नैतिकता से इनका तात्पर्य सामाजिक नैतिकता और धार्मिक नैतिकता दोनों से था और चारित्रिक विकास से तात्पर्य ऐसे आत्मबल के विकास से था जो मनुष्य को सत्य मार्ग पर चलने में सहायक हो और उसे असत्य मार्ग पर चलने से रोके। इनका विश्वास था कि ऐसे नैतिक एवं चरित्रवान मनुष्यों से ही कोई समाज अथवा राष्ट्र आगे बढ़ सकता है, ऊँचा उठ सकता है।

5. व्यावसायिक विकास- स्वामी जी ने भारत की दरिद्र जनता को बड़े निकट से देखा था, उनके शरीर से झाँकती हुई हड्डियों को रोटी, पड़े और मकान की मांग करते हुए देखा था। साथ ही इन्होंने पाश्चात्य देशों के वैभवशाली जीवन को भी देखा था और इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि उन देशों ने यह भौतिक सम्पन्नता ज्ञान-विज्ञान और तकनीकी के विकास और प्रयोग से प्राप्त की है। अतः इन्होंने उद्घोष किया कि कोरे आध्यात्मिक सिद्धान्तों से जीवन नहीं चल सकता, हमें कर्म के हर क्षेत्र में आगे आना चाहिए। इसके लिए इन्होंने शिक्षा द्वारा मनुष्यों को उत्पादन एवं उद्योग कार्यों तथा अन्य व्यवसायों में प्रशिक्षित करने पर बल दिया।

6. राष्ट्रीय एकता एवं विश्वबन्धुत्व का विकास- स्वामी जी के समय हमारा देश अंग्रेजों के अधीन था, हम परतन्त्र थे। स्वामी जी ने अनुभव किया कि परतन्त्रता हीनता को जन्म देती है और हीनता हमारे सारे दुःखों का सबसे बड़ा कारण है। अतः जब ये अमरीका से भारत लौटे तो इन्होंने भारत की भूमि पर पैर रखते

ही युवकों का आह्वान किया- 'तुम्हारा सबसे पहला कार्य देश को स्वतन्त्र कराना होना चाहिए और इसके लिए जो भी बलिदान करना पड़े, उसके लिए तैयार होना चाहिए। इन्होंने उस समय ऐसी शिक्षा की व्यवस्था की आवश्यकता पर बल दिया जो देशवासियों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करे, उन्हें संगठित होकर देश की स्वतन्त्रता के लिए संघर्षरत करे। परन्तु ये संकीर्ण राष्ट्रीयता के हामी नहीं थे। ये तो सब मनुष्यों में उस परमात्मा के दर्शन करते थे और इस दृष्टि से विश्वबन्धुत्व में विश्वास करते थे।

7. धार्मिक शिक्षा एवं आध्यात्मिक विकास- स्वामी जी शिक्षा द्वारा मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों पक्षों के विकास पर समान बल देते थे। इनका स्पष्ट मत था कि मनुष्य का भौतिक विकास आध्यात्मिकता की पृष्ठभूमि में होना चाहिए और उसका आध्यात्मिक विकास भौतिक विकास के आधार पर होना चाहिए और ऐसा तभी सम्भव है जब मनुष्य धर्म का पालन करे। धर्म को स्वामी जी उसके व्यापक रूप में लेते थे। इनकी दृष्टि से धर्म वह है जो हमें प्रेम सिखाता है और द्वेष से बचाता है, हमें मानवमात्र की सेवा में प्रवृत्त करता है और मानव के शोषण से बचाता है और हमारे भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के विकास में सहायक होता है। स्वामी जी मनुष्य को प्रारम्भ से ही ऐसे धर्म की शिक्षा देने पर बल देते थे। इनकी दृष्टि से ये सब गुण हमारे अद्वैत वेदान्त धर्म में है, यह संसार में एकत्व भाव की अनुभूति कराता है और सबसे प्रेम करना सिखाता है। यह सार्वभौमिक धर्म है। इनकी दृष्टि से संसार के अन्य धर्म की कुछ ऐसी ही शिक्षाएँ देते हैं पर उन सबमें हमारा भारतीय वेदान्त धर्म सर्वश्रेष्ठ है । अतः हमें प्रारम्भ से ही उसकी शिक्षा देनी चाहिए। साथ ही बच्चों को जीवन के अन्तिम उद्देश्य मुक्ति की प्राप्ति के लिए प्रारम्भ से ही ज्ञान योग, कर्म योग, भक्ति योग अथवा राज योग की ओर उन्मुख करना चाहिए। इनकी दृष्टि से वास्तविक शिक्षा वही है जो मनुष्य को भौतिक जीवन जीने के लिए और आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त करने के लिए तैयार करती हैं।

शिक्षा की पाठ्यचर्या के सन्दर्भ में स्वामी विवेकानन्द के विचार

पाठ्यचर्या तो उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन होती है। स्वामी जी ने अपने द्वारा निश्चित शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु एक विस्तृत पाठ्यचर्या का विधान प्रस्तुत किया। इन्होंने शिक्षा की पाठ्यचर्या में मनुष्य के शारीरिक विकास हेतु खेल-कूद, व्यायाम और यौगिक क्रियाओं और मानसिक एवं बौद्धिक विकास हेतु भाषा, कला, संगीत, इतिहास, भूगोल, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, गणित और विज्ञान विषयों को स्थान देने पर बल दिया। भाषा के सन्दर्भ में स्वामी जी का दृष्टिकोण बड़ा विस्तृत था। इनकी दृष्टि से अपने सामान्य जीवन के लिए मातृभाषा, अपने धर्म दर्शन को समझने के लिए संस्कृत भाषा, अपने देश को समझने के लिए प्रादेशिक भाषाओं और विदेशी ज्ञान-विज्ञान एवं तकनीकी को समझने के लिए अंग्रेजी भाषा का ज्ञान आवश्यक है अतः इन भाषाओं को पाठ्यक्रम में स्थान दैना चाहिए। कला को ये मनुष्य जीवन का अभिन्न

अंग मानते थे और इसके अन्तर्गत चित्रकला, वास्तुकला, संगीत, नृत्य और अभिनय सभी को पाठ्यक्रम में स्थान देने के पक्ष में थे। इतिहास के अन्तर्गत ये भारत और यूरोप दोनों के इतिहास को पढ़ाने के पक्ष में थे। इनका तर्क था कि भारत का इतिहास पढ़ने से बच्चों में स्वदेश प्रेम विकसित होगा और यूरोप का इतिहास पढ़ने से वे भौतिक को प्राप्त करने के लिए कर्मशील होंगे। इन्होंने राजनीतिशास्त्र और अर्थशास्त्र को पाठ्यचर्या में स्थान देने पर भी बल दिया। इनका विश्वास था कि इन दोनों विषयों के अध्ययन से बच्चों में राजनैतिक चेतना जागृत होगी और वे आर्थिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। मनुष्यों में समाज सेवा का भाव उत्पन्न करने और उन्हें समाज सेवा की ओर उन्मुख करने के लिए स्वामी जी ने शिक्षा के सभी स्तरों पर समाज सेवा को अनिवार्य करने पर बल दिया उनके नैतिक एवं चारित्रिक विकास हेतु धर्म एवं नीतिशास्त्र की शिक्षा को अनिवार्य करने पर बल दिया। व्यावसायिक विकास हेतु मातृ भाषा, अंग्रेज़ी भाषा, भौतिक विज्ञान, कृषि विज्ञान, तकनीकी और उद्योग कौशल की शिक्षा पर बल दिया और उनके आध्यात्मिक विकास हेतु साहित्य, धर्म दर्शन और नीतिशास्त्र विषयों तथा भजन, कीर्तन, सत्संग और ध्यान की क्रियाओं को स्थान देने पर बल दिया।

स्वामी जी ने देश में उच्च शिक्षा की व्यवस्था करने और उसके द्वारा अपने ही देश में इंजीनियरों, डाक्टरों, वकीलों और प्रशासकों आदि की शिक्षा की व्यवस्था करने पर भी बल दिया। ये जानते थे कि जब तक हम जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आत्मनिर्भर नहीं हो जाते तब तक हम न भौतिक उन्नति कर सकते हैं और न आध्यात्मिक। इन्होनें शिक्षाविदों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया कि देश-विदेश में. जहा जो अच्छा है, लाभकारी हैं, हमारे समाज और राष्ट्र के उत्थान के लिए आवश्यक है, उसे उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाए। इस प्रकार शिक्षा की पाठ्यचर्या के सम्बन्ध में स्वामी जी का दृष्टिकोण अति व्यापक था और क्यों न होता, इन्होंने अपने देश के उच्चतम धर्म-दर्शन को पढ़ा और समझा था और पाश्चात्य जगत के भौतिक वैभव को अपनी आँखों से देखा था। ये जानते थे कि पाश्चात्य जगत के भौतिक ज्ञान से हम अपना भौतिक विकास कर सकते हैं और अपने देश के आध्यात्मिक ज्ञान से अपना आध्यात्मिक विकास कर सकते हैं। इस प्रकार शिक्षा की पाठ्यचर्या के सम्बन्ध में स्वामी जी का दृष्टिकोण अति आधुनिक और अति व्यापक था।

शिक्षण विधियों के सन्दर्भ में स्वामी विवेकानन्द के विचार

स्वामी जी आत्मा की पूर्णता में विश्वास करते थे और यह मानते थे कि आत्मा सर्वज्ञ है। परन्तु यह तभी सम्भव है जब मनुष्य को स्वयं आत्मज्ञान हो, वह स्वयं आत्मद्दष्टा हो। स्वामी जी के विचार से मनुष्य को आत्मज्ञान तभी होता है जब उसे भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार का ज्ञान हो । स्वामी जी ने भौतिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रत्यक्ष अनुकरण, व्याख्यान, निर्देशन, विचार-विमर्श और प्रयोग विधियों

का समर्थन किया है और आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए स्वाध्याय, मनन, ध्यान और योग की विधियों का समर्थन किया है। इन्होंने अपने अनुभव के आधार पर यह बात बहुत बलपूर्वक कही कि भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त करने की सर्वोत्तम विधि योग विधि (एकाग्रता) है। स्वामी जी स्वयं शिक्षक थे। इन्होंने देश-विदेश में लोगों को वेदान्त की शिक्षा दी थी और उन्हें ध्यान क्रिया में प्रशिक्षित किया था। पर इन्होंने उपरोक्त सभी विधियों को कुछ अपने विशिष्ट रूप में प्रयोग किया था। अतः यहाँ इनके इस विशिष्ट रूप को समझना आवश्यक है।

1. अनुकरण विधि- स्वामी जी यह बात जानते थे कि मनुष्य प्रारम्भ में भाषा और व्यवहार की विधियाँ अनुकरण द्वारा ही सीखता है इसलिए इन्होंने शुद्ध भाषा और समाज सम्मत आचरण की शिक्षा के लिए इसे सर्वोत्तम विधि बताया। इन्होंने इस बात पर बल दिया कि माता-पिता और शिक्षकों को बच्चों के सामने शुद्ध भाषा का प्रयोग करना चाहिए और आचरण के उच्च आदर्श प्रस्तुत करने चाहिए जिनका अनुकरण कर बच्चे शुद्ध भाषा सीखें और उत्तम आचरण करें। खेल-कूद, व्यायाम, योगासन एवं अन्य कुछ क्रियाओं की शिक्षा के लिए भी ये इस विधि को उपयुक्त मानते थे। ये लोगों को योग की शिक्षा इसी विधि से देते थे।

2. व्याख्यान विधि- तथ्यों की जानकारी मौखिक रूप से देने की विधि को व्याख्यान विधि कहते – हैं। स्वामी जी यह बात मानते थे कि पूर्वजों द्वारा खोजे सत्यों का ज्ञान व्याख्यान विधि द्वारा सरलता और शीघ्रता से कराया जा सकता है। परन्तु ये किसी भी तथ्य को विवेक की कसौटी पर कसकर स्वीकार करने पर बल देते थे। यही इनकी व्याख्यान विधि की विशेषता थी। ये वेदान्त के सिद्धान्तों की शिक्षा व्याख्यान विधि द्वारा ही देते थे पर तर्कपूर्ण ढंग से देते थे, वैज्ञानिक ढंग से देते थे।

3. तर्क एवं विचार-विमर्श विधि- तथ्यों को सीधे ग्रहण न करके उनके विषय में 'या' ''यों', ''कैसे प्रश्न करने, उनका तार्किक उत्तर प्राप्त करने, अपनी शंकाओं को बार-बार उठाने और उनका समाधान खोजने की विधि को तर्क एवं विचार-विमर्श विधि कहते हैं। यह तर्क विधि भारतीय न्याय दर्शन की तर्क विधि से भिन्न है। इस विधि से शिक्षक शिक्षार्थियों की शंकाओं का समाधान करते हैं। इस आधार पर कुछ विद्वान् इसे शंका समाधान विधि भी कहते हैं। इस विधि में शिक्षक शिक्षार्थियों की शंकाओं के समाधान हेतु तथ्यों की व्याख्या करते हैं। इस आधार पर कुछ विद्वान् इसे व्याख्या विध कहते हैं। तथ्यों की व्याख्या में तथ्यों का विश्लेषण करना पड़ता है। इस आधार पर कुछ विद्वान् इसे विश्लेषण विधि कहते हैं। स्वामी जी किसी भी तथ्य को स्पष्ट करने के लिए तर्कपूर्ण विचार-विमर्श करते थे इसलिए इन्होंने इस विधि को तर्क एवं विचार-विमर्श विधि कहा है।

4. निर्देशन और परामर्श विधि- वैयष्टिक निर्देशन और परामर्श द्वारा शिक्षार्थियों का मार्ग . निर्देशन करने, उनकी स्वयं सीखने में सहायता करने और बीच-बीच में उनकी शंकाओं का समाधान करने की विधि को

निर्देशन एवं परामर्श विधि कहते हैं। इस विधि में शिक्षक शिक्षार्थियों की क्या पढ़ें और कैसे पढ़ें, क्या करें और कैसे करें, इस सम्बन्ध में सहायता करते हैं। इस विधि में शिक्षार्थी स्वाध्याय अथवा स्व क्रिया द्वारा स्वयं सीखते हैं, शिक्षक तो उनका केवल मार्गदर्शन करते हैं। स्वामी जी किशोर और युवकों की शिक्षा के लिए इस विधि को उत्तम विधि मानते थे।

5. प्रदर्शन एवं प्रयोग विधि- स्वामी जी प्रायोगिक विषयों-विज्ञान एवं तकनीकी और क्रियाओं के शिक्षण एवं प्रशिक्षण के लिए इस विधि के प्रयोग का समर्थन करते थे। इस विधि में शिक्षक वस्तु अथवा क्रिया को प्रस्तुत करात है, शिक्षार्थी अवलोकन करते हैं, शिक्षक हर तथ्य को स्पष्ट करता है, शिक्षार्थी उसे प्रयोग करके निश्चित करते हैं। आज तो इस विधि में बच्चों की सक्रिय साझेदारी ली जाती है। अपने सही अर्थों में विज्ञान आदि प्रायोगिक विषयों को शिक्षा इसी विधि में दी जा सकती है।

6. स्वाध्याय विधि स्वाध्याय विधि- का अर्थ है स्वयं अध्ययन करना। इस विधि में शिक्षार्थी तथ्यों का ज्ञान तत्सम्बन्धी पुस्तकों के अध्ययन द्वारा करते हैं। स्वामी जी अपने धर्म-दर्शन के ज्ञान के लिए आर्य ग्रन्थों के अध्ययन पर बल देते थे। ये कहा करते थे कि सब कुछ उपदेशों एवं व्याख्यानों द्वारा नहीं बताया जा सकता, किसी भी विषय के पूर्ण ज्ञान के लिए उससे सम्बन्धित प्रमाणिक ग्रन्थों का अध्ययन आवश्यक होता है। शिक्षार्थी द्वारा इन प्रमाणिक ग्रन्थों को स्वयं पढ़ना और स्वयं समझने का प्रयत्न करना ही स्वाध्याय विधि है। स्वाध्याय को स्वामी जी तब तक अधूरा मानते थे जब तक उस पर चिन्तन, मनन और निदिध्यासन नहीं किया जाए। इनका उदघोष था कि किसी भी तथ्य को विवेक की कसौटी पर कसकर ही स्वीकार करो। इस प्रकार स्वामी जी द्वारा अनुमोदित स्वाध्याय विधि आज की . पुस्तक विधि अथवा पुस्तकालय विधि से कुछ भिन्न है, कुछ अधिक है और कुछ अधिक उपयोगी है।

7. योग विधि- स्वामी जी इसे भौतिक एवं आध्यात्मिक किसी भी प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने अथवा ज्ञान की खोज करने की सर्वोत्तम विधि मानते थे। इनकी दृष्टि से भौतिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए अल्प योग (अल्पकालीन एकाग्रता) ही पर्याप्त होता है परन्तु आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए पूर्ण योग (दीर्घकालीन एकाग्रता) की आवश्यकता होती है। आज के मनोवैज्ञानिक भी तो यही कहते हैं कि ज्ञान प्राप्ति के लिए सीखे जाने वाली वस्तु अथवा क्रिया पर ध्यान केन्द्रित करना आवश्यक है। हमारा अपना अनुभव भी यही बताता है कि सीखने वाले में सीखने के लिए जितना अधिक योग होता है, वह उतनी ही शीघ्रता से सीखता है। स्वामी विवेकानन्द तो बचपन से ही इस विधि का प्रयोग करते थे।

निष्कर्ष

भारत जैसे विशाल देश में जनसाधारण की शिक्षा व्यवस्था के सम्बन्ध में स्वामी जी के विचारों का डॉ० सेठ ने इस प्रकार उल्लेख किया है- ‘‘जनता को शिक्षित करने हेतु गाँव-गाँव, घर-घर जाकर शिक्षा देनी

होगी। इसका कारण यह है कि ग्रामीण बालकों को जीविकोपार्जन हेतु अपने पिता के साथ खेत पर काम करने हेतु जाना पड़ता है। वे शिक्षा ग्रहण करने शिक्षालय नहीं आ पाते हैं। इस सम्बन्ध में स्वामी जी ने सुझाव दिया है कि यदि संन्यासियों में से कुछ को धर्मेत्तर विषयों की शिक्षा देने हेतु गठित कर लिया जाये तो अत्यन्त सहजता से घर-घर घूमकर वे अध्यापन एवं धार्मिक शिक्षा दोनों कार्य कर सकते हैं। कल्पना कीजिये कि दो संन्यासी कैमरा, ग्लोब तथा कुछ मानचित्रों के साथ सायंकाल किसी गाँव में पहुँचे। इन साधनों के माध्यम से वे जनता को भूगोल, ज्योतिष इत्यादि की शिक्षा प्रदान करते हैं। इसी तरह कथा-कहानियों के माध्यम से वे दूसरे देश के बारे में अपरिचित जनता को इतनी बातें बताते हैं, जितनी वे पुस्तक के माध्यम से आजीवन में नहीं सीख सकते हैं। क्या इन वैज्ञानिक साधनों द्वारा आज की जनता के अज्ञानयुक्त तिमिर को जल्दी दूर करने का यह एक उपयुक्त सुझाव नहीं है ? क्या संन्यासी स्वयं इस लोकसेवा के माध्यम से अपनी आत्मा के प्रकाश को अधिकाधिक प्रदीप्त नहीं कर सकते हैं।" स्वामी जी के अनुसार जनशिक्षा के कार्य को सरकार एवं समाज दोनों को मिलकर करना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

निवेदिता, एस. (2015) द मास्टर ऐज़ आई सॉ हिम। कलकत्ता : उद्बोधन. निवेदिता, सिस्टर (2019), 'द मास्टर ऐज़ आई सॉ हिम', उद्बोधन, कोलकाता।

पाध्य, के.एस. (2016), 'इंडियन पॉलिटिकल थॉट', पीएचआई, नई दिल्ली। शांति शिक्षा (2015)। शिक्षक शिक्षा के लिए ढांचा, यूनेस्को, पेरिस।

प्रभानंद, एस. (2014), "इन सर्च ऑफ अवर नेशनलिस्ट रूट्स फॉर ए फिलॉसफी ऑफ एजुकेशन; आरकेएमआईसी, कोलकाता

प्रकाश, वी. और बिस्वाल, के. (एड.) (2018) परिप्रेक्ष्य शिक्षा और विकास पर एनयूईपीए: शिप्रा प्रकाशन दिल्ली:

रघुरामाराजू, ए. (2016), 'डिबेट्स इन इंडियन फिलॉसफी: क्लासिकल, कोलोनियल एंड कंटेम्परेरी', ओयूपी, नई दिल्ली

रघुरामाराजू, ए. (2014) डिबेटिंग विवेकानंद: ए रीडर ऑक्सफोर्ड। विश्व - विद्यालय का मुद्रणालय। नई दिल्ली:

रघुरामराजू, ए. एड. (2014), डिबेटिंग विवेकानंद: ए रीडर', ओयूपी, नई दिल्ली।

रंगनाथानंद, एस. (2015) स्वामी विवेकानंद एंड ह्यूमन एक्सीलेंस। दूसरा संस्करण: अद्वैत आश्रम। कलकत्ता।

रंगनाथानंद, एस. (2015), 'स्वामी विवेकानंद और मानव उत्कृष्टता', हार्वर्ड विश्वविद्यालय व्याख्यान, अद्वैत आश्रम, कोलकाता। रंगनाथनन्द, स्व., 'स्वामी विवेकानंद का विज्ञान और धर्म का संश्लेषण', आरकेएमआईसी, कोलकाता।

रे, एस. और रे, ए.बी. (2014) मानव विकास के लिए दृष्टिकोण कोलकाता: अद्वैत आश्रम रोलैंड, आर. (2016), 'दि लाइफ ऑफ विवेकानंद एंड द यूनिवर्सल गॉस्पेल' (ट्रांस। ई.एफ. मैल्कॉम स्मिथ) अद्वैत आश्रम, कोलकाता।

सर्वभूटानन्द, एस. (एड) (2018) एक्सप्लोरिंग हार्मनी अमंग रिलिजियस ट्रेडिशन्स इन इंडिया।

कोलकाता: रामकृष्ण मिशन इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर. सतप्रकाशानंद, एस। (2018) विवेकानंद: वर्तमान युग अद्वैत आश्रम में उनका योगदान।

कोलकाता: सेन, एपी (2018) स्वामी विवेकानंद। ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस। नई दिल्ली सेनगुप्ता,

पी.के. (एड) (2015) द फिलॉसफी ऑफ स्वामी विवेकानंद। कोलकाता : प्रोग्रेसिव पब्लिशर्स

शर्मा, जी.आर. (2017), 'ट्रेंड्स इन कंटेम्पररी इंडियन फिलॉसफी ऑफ एजुकेशन', निर्मल पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

शुद्धिदानन्द, एस. (2018) विवेकानंद टर्निंग पॉइंट के रूप में। कोलकाता: अद्वैत आश्रम। शुक्ला, आर.पी. (2014) वैल्यू एजुकेशन एंड ह्यूमन राइट्स नई दिल्ली: सरूप एंड संस सिल,

एन.पी. (2017) स्वामी विवेकानंद: एक पुनर्मूल्यांकन लंदन: एसोसिएटेड यूनिवर्सिटी प्रेस।

श्री अरबिंदा (2017), 'बंकिम, तिलक, दयानंद' श्री अरबिंदा आश्रम, पांडिचेरी।

स्टविग, जी. (2019), 'स्वामी विवेकानंद एंड लिबरेशन थियोलॉजी', आरकेएमआईसी का बुलेटिन, नवंबर-दिसंबर। 2019